आज़ादी का अमृत महोत्सव

एम.जी.एन.सी.आर.ई@25
दशहरा और दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं!

द रुरल कनेक्ट

खंड 01 अंक 05 हैदराबाद नवंबर 2021 8 पृष्ठ रु.5/-

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद

Mahatma Gandhi National Council of Rural Education

उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सत्यमेव जयते

Where there is Rural Wellbeing there is Universal Prosperity

केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा, "नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) ऐसे समय में आई है जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आभासी वास्तविकता जैसी विघटनकारी तकनीक ने कई क्षेत्रों में ठोस रास्ता अपना लिया है।" *"ये प्रौद्योगिकियां हमारे बच्चों और शिक्षकों के लिए कई अवसर पेश करती हैं। हमारी सरकार ने राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा वास्तुकला (एन.डी.ई.ए.आर.) की घोषणा की है, जो संपूर्ण शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को सक्रिय करने के लिए एक एकीकृत राष्ट्रीय डिजिटल बुनियादी ढांचा है।"*

केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने एक समीक्षा बैठक में कहा, "इन दिनों शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक सुधार हुआ है।" ***"यह खुशी की बात है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति कुछ राज्यों में सही मायने में लागू की गई है, और कौशल विकास को भी प्राथमिकता मिल रही है।"***

श्री धर्मेंद्र प्रधान ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय फ़ैलोशिप (एम.जी.एन.एफ.) के दूसरे चरण का शुभारंभ करते हुए छात्रों से ***कौशल विकास के प्रयासों को चलाकर जमीनी स्तर पर सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक*** *के रूप में कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने जिला कलेक्टरों और अकादमिक साझेदार आई.आई.एम. से भी इस फेलोशिप के माध्यम से फेलो की सुविधा और बदलाव की सफलता की कहानी लिखने का आग्रह किया।*

गांधी जयंती के अवसर पर महात्मा गांधी को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए, श्री धर्मेंद्र प्रधान ने पर्यावरण की देखभाल में महान महात्मा गांधी की विरासत को आगे बढ़ाने के लिए और व्यवहार परिवर्तन, करुणा के साथ उपभोग और तार्किक और पारिस्थितिक रूप से कार्य करने के लिए एक स्पष्ट संदेश देने वाले एक प्रेरक भाषण के लिए प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सराहना की।

भारत-वैश्विक शिक्षा और कौशल सम्मेलन 27-29 अक्टूबर तक

तेलंगाना सरकार, कॉलेजिएट शिक्षा और तकनीकी शिक्षा विभाग और इंडिग्लोबल मीडिया नेटवर्क (एक आधुनिक और व्यापक मीडिया संगठन) ने संयुक्त रूप से "इंडिया-ग्लोबल एजुकेशन एंड स्किल समिट" का आयोजन किया, जो 27 -29 अक्टूबर 2021 तक तीन दिवसीय मेगा वर्चुअल कॉन्फ्रेंस, एक्सपो और पुरस्कार मण्डली है। इसका उद्देश्य बेहतर राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा और कौशल क्षेत्र को और बढ़ाने के लिए नए विचारों के साथ आना है। तीन दिवसीय मेगा वर्चुअल मण्डली जिसमें 15 से अधिक सत्र, 20 से अधिक राज्य, 100 से अधिक शिक्षा और कौशल नेता और 3000 से अधिक प्रतिनिधि शामिल थे, तीन घटक - सम्मेलन, प्रदर्शनी और पुरस्कारों में एक वन-स्टॉप प्लेटफॉर्म था। कार्यक्रम के अध्यक्ष **श्री नवीन मित्तल, आई.ए.एस., आयुक्त, कॉलेजिएट शिक्षा और कौशल शिक्षा, तेलंगाना सरकार** ने मुख्य संबोधन किया हैं।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. के अध्यक्ष डॉ. डब्ल्यू. जी. प्रसन्न कुमार मुख्य वक्ता थे। उन्होंने शिक्षा ग्रामीण चिंता परिदृश्य: चुनौतियां, सर्वोत्तम अभ्यास, नवाचार और रोड मैप पर विस्तार से बात की।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. की कौशल विकास एकीकरण योजनाएं

*कृषि भंडारण और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन में बी.एम.एस. डिग्री कार्यक्रम लगभग 10 संस्थानों में शुरू किया जाएगा जहां ग्रामीण प्रबंधन में एम.जी.एन.सी.आर.ई. का बी.बी.ए. शुरू किया गया है।...**अधिक जानकारी के लिए अंदर देखें*

पी.एम.एफ.एम.ई. एक जनपद एक उत्पाद (ओ.डी.ओ.पी.)

9 राज्य - 27 कार्यशालाएं - 73 प्रतिभागी

एम.जी.एन.सी.आर.ई. की चालू ओ.डी.ओ.पी. परियोजना वांछित परिणाम ला रही है - उच्चतर शिक्षण संस्थानों को ओ.डी.ओ.पी. दृष्टिकोण से जोड़ना। पी.एम.एफ.एम.ई. योजना इनपुट की खरीद, सामान्य सेवाओं का लाभ उठाने और उत्पादों के विपणन के मामले में पैमाने का लाभ उठाने के लिए एक जनपद एक उत्पाद (ओ.डी.ओ.पी.) दृष्टिकोण अपनाती है। योजना के लिए ओ.डी.ओ.पी. मूल्य श्रृंखला विकास और समर्थन बुनियादी ढांचे के संरेखण के लिए ढांचा प्रदान करेगा। विचार देश के प्रत्येक जिले से एक उत्पाद का चयन, ब्रांड और प्रचार करना है। यह योजना सहायता और सेवाओं के पैकेज के माध्यम से सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों को सहायता प्रदान करने का प्रयास करती है।

अभिव्यक्ति 2021 - 30-31 अक्टूबर - क्या फिजिटल नया सामान्य है? - व्यवसाय और विकास के लिए निहितार्थ

एक्स.आई.एम. विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के ग्रामीण प्रबंधकों के संघ ने 'अभिव्यक्ति' का आयोजन किया, जो एक उद्योग इंटरफेस कार्यक्रम है जो ग्रामीण प्रबंधन के क्षेत्र से कुछ बेहतरीन दिमागों को इकट्ठा करता है जो अपने प्रासंगिक अनुभव, बाधाओं का सामना करने के साथ-साथ उनके विरोध को साझा करने के लिए एक साथ आते हैं। ग्रामीण प्रबंधन के छात्र अपने स्वयं के वास्तविक समय के अनुभवों से ग्रामीण प्रबंधन की आवश्यकता को समझते हैं। मुख्य वक्ताओं में से एक, **अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई.** ने एम.जी.एन.सी.आर.ई. के पी.एम.एफ.एम.ई. वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (ओ.डी.ओ.पी.) अभियान और एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा ग्रामीण प्रबंधन पर किए जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला।

संपादक की टिप्पणी

जब हम महात्मा गांधी की 152वीं जयंती मना रहे हैं, मैं उस महान व्यक्ति को नमन करता हूं, जिनके आदर्श और सिद्धांत आज भी कायम हैं। पर्यावरण के लिए उनकी चिंता, स्वच्छता और अनुभवात्मक शिक्षा, हमें कई परियोजनाओं को शुरू करने के लिए मार्गदर्शन कर रही है, जिनके अत्यधिक सफल परिणाम रहे हैं। मैं संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस के शब्दों को दोहराता हूं क्योंकि उन्होंने 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' पर "शांति और सहिष्णुता के एक नए युग की शुरुआत" की आवश्यकता पर बल दिया और देशों से शांति कार्यकर्ता के अहिंसा संदेश पर ध्यान देने का आग्रह किया।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. अपनी कौशल विकास एकीकरण योजनाओं को सामने रखता है। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि कृषि भंडारण और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन पाठ्यक्रम में शिक्षुता आधारित बी.एम.एस. लगभग 10 संस्थानों में शुरू किया जाना है जहां ग्रामीण प्रबंधन में एम.जी.एन.सी.आर.ई. का बी.बी.ए. शुरू किया गया है।

ग्रामीण उद्यमिता को संबोधित करने के लिए वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (ओ.डी.ओ.पी.) अभियान उत्साहजनक परिणाम ला रहा है। 27 ओ.डी.ओ.पी. कार्यशालाएं आयोजित की गईं। ये कार्यशालाएं छात्रों के लिए इंटर्न के लिए एक उत्कृष्ट अवसर हैं, जब वे अवधारणाओं का अध्ययन करते हैं और उन्हें कौशल में परिवर्तित करते हैं। इंटर्न देश भर के संबंधित जिलों में ओ.डी.ओ.पी. दृष्टिकोण के विपणन और ब्रांडिंग में पेशेवर मदद और समर्थन प्रदान करेंगे।

ग्रीन चैंपियंस को पुरस्कार देने के अपने एजेंडे के हिस्से के रूप में, एम.जी.एन.सी.आर.ई. 342 उच्चतर शिक्षण संस्थानों का मूल्यांकन कर रहा है, जिसके लिए मूल कार्य शुरू किया गया है। एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने इससे पहले देश भर में सामुदायिक जुड़ाव, हरियाली, जल संरक्षण, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, ऊर्जा प्रबंधन, स्वच्छता और स्वास्थ्य और कोविड जागरूकता और तैयारी में शामिल 22,000 से अधिक उच्चतर शिक्षण संस्थानों के साथ काम करते हुए, जिला ग्रीन चैंपियंस के रूप में 400 उ.शि.सं. को सम्मानित किया था। पुरस्कार जिला कलेक्टरों/आयुक्तों/मजिस्ट्रेट द्वारा प्रदान किए गए। अब, परिषद देश के कुल 742 जिलों में से शेष 332 उच्चतर शिक्षा संस्थानों को जिलेवार पुरस्कार देने की राह पर है, जिसे फरवरी 2022 तक चरणबद्ध तरीके से पूरा किया जाएगा।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. - गतिविधियों की समीक्षा - नवंबर 2021

- ***कौशल विकास एकीकरण योजनाएं - कृषि भंडारण और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन में बी.एम.एस. डिग्री कार्यक्रम*** *को 10 एच.ई.आई. में शुरू करने की अनुमति दी जा रही है जहां एम.जी.एन.सी.आर.ई. के बी.बी.ए. आर.एम. को पेश किया गया है।*
- ***25*** *लघु अनुसंधान परियोजनाएं,* ***24*** ***प्रमुख*** *अनुसंधान परियोजनाएं,* ***20*** *पी.एच.डी. फैलोशिप -* ***आरंभ***
- ***73*** *प्रतिभागियों के साथ* ***9*** *राज्यों में* ***27*** *जिला स्तरीय कार्यशालाएं -* ***एक जनपद एक उत्पाद (ओ.डी.ओ.पी.)*** *दृष्टिकोण के साथ एच.ई.आई. को जोड़ना*
- *आजादी का अमृत महोत्सव प्रतियोगिता के हिस्से के रूप में* ***1665*** *जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) से* ***476 विजेताओं*** *की घोषणा की गई*
- ***ग्रामीण उद्यमिता और स्थिरता*** *पर* ***57*** *संकाय सदस्यों के साथ संकाय विकास कार्यक्रम*
- ***व्यावसायिक शिक्षा अध्यापन कार्य योजना 2021-22 पर 17 क्लस्टर कार्यशालाएं***
- *158 उच्चतर शिक्षा संस्थानों ने जल संरक्षण गतिविधि संचालित की है। यह गतिविधि "स्टेप अप! कैंपस में जल संरक्षण" है।* ***2000 से अधिक छात्रों*** *को मात्रात्मक शर्तों में जल और संचयन आकलन में लगाया जा रहा है।* ***46 कॉलेजों*** *ने स्वच्छता की चुनौतियों की पहचान की है। संस्थानों का भौतिक दौरा किया गया और वीडियो केसलेट का काम प्रगति पर है।*
- ***865 कॉलेज*** *कैंपस सर्वे मॉनिटरिंग और ऑडिटिंग में लगे हुए हैं।*
- *ग्रामीण प्रबंधन के लिए एच.ई.आई. के साथ* ***5 समझौता ज्ञापन***
- *ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए* ***5 राउंड टेबल बैठक***
- ***यू.बी.ए.*** *- आर.सी.आई. और पी.आई. के साथ समीक्षा बैठक*
- *बी.बी.ए. आर.एम. में* ***15 ए.वी. पाठ***

एस.सी.ई.आर.टी. / डाइट / विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग / शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज टास्क फोर्स के लिए व्यावसायिक शिक्षा अध्यापन कार्य योजना 2021-22 पर 17 क्लस्टर कार्यशालाएं आयोजित की गईं। भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. एन.सी.ई.आर.टी. भोपाल के सहयोग से एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा बुलाई गई **आजादी का अमृत महोत्सव प्रतियोगिता** सफलतापूर्वक पूरी हो गई है और विजेताओं की घोषणा की गई है। 166 जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों (डाइट) से कुल 476 विजेताओं को नकद पुरस्कार दिए गए। 23,126 प्रतिभागियों को शामिल करते हुए कुल 428 व्यावसायिक शिक्षा और अनुभवात्मक शिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। कार्यशालाओं में चर्चा नई तालीम और विषय पद्धति, अनुभवात्मक शिक्षा के आसपास के विषय और विभिन्न विषय पद्धतियों के लिए उपकरणों के उपयोग के आसपास थी।

"इंडिया-ग्लोबल एजुकेशन एंड स्किल समिट", एक तीन दिवसीय मेगा वर्चुअल सम्मेलन, एक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम था, जहाँ एक मुख्य वक्ता के रूप में मुझे शिक्षा ग्रामीण चिंता परिदृश्य: चुनौतियाँ, सर्वोत्तम अभ्यास, नवाचार और रोड मैप पर विशिष्ट दर्शकों को संबोधित करने का अवसर मिला। सम्मेलन को श्री नवीन मित्तल, आई.ए.एस. आयुक्त कॉलेजिएट और तकनीकी शिक्षा विभाग, तेलंगाना सरकार, विशिष्ट अतिथि डॉ. अनिल सहस्रबुद्धे, अध्यक्ष अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (ए.आई.सी.टी.ई.), श्री राजेश अग्रवाल, आई.ए.एस. सचिव कौशल विकास उद्यमिता मंत्रालय, भारत सरकार, ने संबोधित किया। और प्रो. (डॉ.) आर. लिंबाद्री, अध्यक्ष तेलंगाना राज्य उच्चतर शिक्षा परिषद (टी.एस.सी.एच.ई.), श्रीमती श्री देवसेना, आई.ए.एस. आयुक्त और निदेशक स्कूल शिक्षा विभाग तेलंगाना सरकार के साथ-साथ कुलपतियों, निदेशकों और प्रमुखों के साथ की मेजबानी किया है।

मुझे ओ.डी.ओ.पी. और ग्रामीण प्रबंधन पर एक्स.आई.एम. भुवनेश्वर में ग्रामीण प्रबंधन सम्मेलन को संबोधित करने का अवसर मिला। विषय "फिजिटल" प्रौद्योगिकी था। फिजिटल लोगों को अद्वितीय इंटरैक्टिव अनुभव प्रदान करने के लिए डिजिटल और भौतिक दुनिया को पाटने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की अवधारणा है। महामारी के बाद फिजिटल समय की जरूरत बन गया है। फोकस इस बात पर है कि कैसे परिवर्तनों को लागू करके और उन्हें बनाए रखते हुए चल रही महामारी में व्यवसायों को विकसित किया है। वास्तव में, फिजिटल व्यावसायिक स्थिरता के लिए आगे का रास्ता है।

डॉ. डब्ल्यू. जी. प्रसन्न कुमार
अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई.

गांधी जयंती के अवसर पर मैं अपने देशवासियों को बधाई देता हूं। हम निरंतर प्रेरणा के लिए उनकी ओर देखते हैं। ***"एक विनम्र तरीके से, आप दुनिया को हिला सकते हैं।"***

वर्ष 2021-22 के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. अनुसंधान परियोजनाएं (प्रमुख / लघु परियोजनाएं) और पी.एच.डी. फैलोशिप शुरू कर दी गई हैं और पूरी गति से चल रही हैं। अध्ययन बहुविषयक हैं जिनमें मानदंड और प्राथमिकता वाले क्षेत्र राज्य और केंद्र द्वारा लागू की जाने वाली सार्वजनिक नीतियां हैं। सरकार ग्रामीण भारत की चिंताओं को संबोधित करने वाली या एक तत्व रखने वाली हैं।

यह नोट करना उत्साहजनक है कि एम.जी.एन.सी.आर.ई. की कौशल विकास एकीकरण योजनाएं लागू हो रही हैं क्योंकि कृषि भंडारण और आपूर्ति श्रृंखला में बी.एम.एस. डिग्री कार्यक्रम को अधिकारियों द्वारा 10 उ.शि.सं. में शुरू करने की अनुमति दी गई है जहां एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने बी.बी.ए. आर.एम. पाठ्यक्रम शुरू किया है। भारतीय राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एन.एस.डी.सी.) के माध्यम से कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एम.एस.डी.ई.) द्वारा स्थापित लॉजिस्टिक्स सेक्टर स्किल काउंसिल (एल.एस.सी.) ने यू.जी.सी. के दिशानिर्देशों के अनुसार सात अप्रेंटिसशिप आधारित यू.जी. डिग्री प्रोग्राम तैयार किए हैं। रसद क्षेत्र में प्रबंधन के पर्यवेक्षी स्तर पर लाभकारी रोजगार के लिए पर्याप्त कौशल और ज्ञान बनाने का उद्देश्य। एल.एस.सी. के कार्यक्रमों का मुख्य फोकस कौशल विकास है, और इसलिए उद्योग शिक्षुता के रूप में नौकरी पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अंतर्निहित है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, जुलाई 2020 में अधिसूचित अपने दिशानिर्देशों में, डिग्री कार्यक्रमों में शिक्षुता प्रशिक्षण के एकीकरण को प्रोत्साहित करता है।

डॉ. भरत पाठक
उपाध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई.

एक जनपद एक उत्पाद (ओ.डी.ओ.पी.), पी.एम.एफ.एम.ई., एम.ओ.एफ.पी.आई.

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम (पी.एम.एफ.एम.ई.) योजना के औपचारिकीकरण के तहत एक जनपद एक उत्पाद (ओ.डी.ओ.पी.) दृष्टिकोण के साथ उच्चतर शैक्षिक संस्थानों में ग्रामीण / सामाजिक उद्यमिता विकास प्रकोष्ठों को जोड़ना

इनपुट की खरीद, सामान्य सेवाओं का लाभ उठाने और उत्पादों के विपणन के मामले में पैमाने का लाभ उठाने के लिए एक जनपद एक उत्पाद (ओ.डी.ओ.पी.) दृष्टिकोण पेश किया गया था।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. ओ.डी.ओ.पी. कार्यशालाएं अक्टूबर 2021

क्रम सं.	जनपद	राज्य	संस्थान	प्रतिभागी
1	पटना	बिहार	3	15
2	उडुपी	कर्नाटक	3	4
3	अंबाला	हरियाणा	5	5
4	भिवानी	हरियाणा	4	4
5	सिपाहीजला	त्रिपुरा	1	4
6	धारवाड़	कर्नाटक	1	2
7	हावेरी	कर्नाटक	3	13
8	मेरठ	उत्तर प्रदेश	5	19
9	अजमेर	राजस्थान	2	7
कुल			**27**	**73**

यह मूल्य श्रृंखला विकास और समर्थन बुनियादी ढांचे के संरेखण के लिए ढांचा प्रदान करेगा। कृषि उत्पादों के लिए समर्थन उनके प्रसंस्करण के साथ-साथ अपव्यय को कम करने, उचित परख और भंडारण और विपणन के प्रयासों के लिए होगा।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने देश में उच्चतर शिक्षण संस्थानों को एक जनपद एक उत्पाद (ओ.डी.ओ.पी.) दृष्टिकोण से जोड़ने के लिए एक अभियान शुरू किया। छात्र देश भर के संबंधित जिलों में ओ.डी.ओ.पी. दृष्टिकोण के विपणन और ब्रांडिंग में पेशेवर मदद और समर्थन देंगे।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. उद्योग - अकादमिक भागीदारी अनुसंधान को आगे बढ़ाने और एक कुशल कार्यबल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, विशेष रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए। उद्योग विशेषज्ञ ज्ञान और व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ उच्चतर शिक्षा संस्थानों (उ.शि.सं.) से रोजगार योग्य प्रतिभा प्राप्त करता है। प्रासंगिक प्रौद्योगिकियों पर काम करने और समस्याओं को सरल या हल करने के अवसर होने से उ.शि.सं. को लाभ होता है। जैसे-जैसे भारत डिजिटलीकरण के युग में फलता-फूलता है, यह ग्रामीण उद्यमियों के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों के लिए इंजीनियरिंग, प्रबंधन और व्यवसाय अध्ययन से सीखे गए ज्ञान को लागू करने के लिए एक युवा तकनीक-प्रेमी आबादी के लिए तैयार है।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. ग्रामीण उद्यमिता विकास (आर.ई.डी.) कार्यक्रम छात्रों को ग्रामीण व्यवसाय में इंटर्नशिप, शिक्षुता और उद्यमिता लेने के लिए प्रेरित करने के लिए उ.शि.सं. में रुचियों को बढ़ावा देने में अडिग रहा है। भारत भर के विभिन्न जिलों में विभिन्न प्रबंधन और व्यावसायिक संस्थानों में मौजूदा आर.ई.डी. सेल जिलों के प्रमुख कृषि उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक जिले में पी.एम.एफ.एम.ई. ओ.डी.ओ.पी. नोडल एजेंसी से जोड़ने की प्रक्रिया में हैं। इच्छुक अंतिम वर्ष के छात्रों को संबंधित जिलों के जिला नोडल अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षित किया जाएगा।

राज्य जल्द खराब होने वाली योजना के फोकस को ध्यान में रखते हुए जिले के लिए खाद्य उत्पाद की पहचान करेंगे। राज्य सरकार द्वारा आधारभूत अध्ययन किया जाएगा। ओ.डी.ओ.पी. उत्पाद खराब होने वाली कृषि उपज, अनाज आधारित उत्पाद या किसी जिले और उनके संबद्ध क्षेत्रों में व्यापक रूप से उत्पादित खाद्य उत्पाद हो सकता है। ऐसे उत्पादों की एक उदाहरण सूची में आम, आलू, लीची, टमाटर, टैपिओका, किन्नू, भुजिया, पेठा, पापड़, अचार, बाजरा आधारित उत्पाद, मत्स्य पालन, मुर्गी पालन, मांस के साथ-साथ पशु चारा शामिल हैं। इसके अलावा, योजना के तहत अपशिष्ट से धन उत्पादों सहित कुछ अन्य पारंपरिक और नवीन उत्पादों का समर्थन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, आदिवासी क्षेत्रों में शहद, लघु वन उत्पाद, पारंपरिक भारतीय हर्बल खाद्य पदार्थ जैसे हल्दी, आंवला, आदि।

ओ.डी.ओ.पी. योजना के कार्यान्वयन में उ.शि.सं. के छात्रों को क्यों शामिल किया जाए?

ग्रामीण उद्यमी व्यापार के विभिन्न पहलुओं में चुनौतियों से निपट रहा है जिसमें बातचीत करना और उचित मूल्य प्राप्त करना, भंडारण, विपणन, रसद, भुगतान प्राप्त करना शामिल है। ग्रामीण कारोबार से जुड़े कई लोग तकनीक के जानकार नहीं हैं और पी.एम.एफ.एम.ई. ओ.डी.ओ.पी. जैसी योजनाओं से मिलने वाले लाभों से अनभिज्ञ हैं।

छात्र स्वयं के लिए मूल्य कैसे जोड़ सकते हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार कैसे कर सकते हैं?

एम.जी.एन.सी.आर.ई. - आर.ई.डी.सी. प्रमाणित संस्थान ग्रामीण अर्थव्यवस्था में शामिल स्थानीय लोगों (तालुका, जिला) से सर्वेक्षण करने और उनसे प्रतिक्रिया लेने के लिए भारत के जिलों के दूरस्थ तालुकाओं में छात्रों को सुविधा प्रदान कर सकते हैं और भेज सकते हैं। इनमें: व्यक्तिगत उद्यम, किसान उत्पादक संगठन, स्वयं सहायता समूह, सहकारिता शामिल हैं।

इंटर्नशिप छात्रों को वास्तविक दुनिया के माहौल में, जो वे सीख रहे हैं उसे क्रियान्वित करने का मौका प्रदान करते हैं। यह छात्रों को उन सिद्धांतों और रणनीतियों को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है जिनके बारे में वे पढ़ रहे हैं, सीखने की प्रक्रिया को मजबूत करते हैं और अवधारणाओं को कौशल में परिवर्तित करते हैं जिससे शिक्षुता प्राप्त होती है। छात्र कनेक्शन बना सकते हैं जो उन्हें स्थिति खोजने, ग्राहकों से मिलने या यहां तक कि सिफारिशें करने में मदद कर सकते हैं।

एक ग्रामीण उद्यम में एक प्रशिक्षु के रूप में काम करना छात्रों को जिम्मेदारी लेना सिखाएगा और वे सीखेंगे कि सौंपे गए कार्यों में स्वतंत्र कैसे रहें। एक शिक्षुता न केवल सीखने और अनुभव करने का अवसर देती है, बल्कि यह व्यक्ति को स्वरोजगार करने और नौकरी प्रदाता बनने का अवसर भी देती है।

छात्र पैकेजिंग, ब्रांडिंग, ग्रामीण से शहरी मार्केटिंग लिंकेज बनाने, डिजिटल मार्केट प्लेस बनाने के संबंध में अभिनव संकल्प लेकर आ सकते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार लाने के प्रयास में निकले छात्र स्वयं ग्रामीण उद्यमी बन सकते हैं और रोजगार प्रदाता बन सकते हैं। भारत सरकार पी.एम.एफ.एम.ई. ओ.डी.ओ.पी. योजना एक जनपद एक उत्पाद योजना को आगे बढ़ाने के लिए नए आवेदकों को सहायता (वित्तीय और तकनीकी) प्रदान करती है।

उ.शि.सं. और ग्रामीण उद्यमियों के बीच सहयोग को सक्षम करने के लिए के.ए.पी.पी.ई.सी. के साथ जुड़ाव।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने कर्नाटक राज्य में राज्य नोडल एजेंसी, कर्नाटक राज्य कृषि उत्पाद प्रसंस्करण और निर्यात निगम लिमिटेड (के.ए.पी.पी.ई.सी.), कर्नाटक सरकार से संपर्क किया, ताकि इंटर्नशिप और शिक्षुता के लिए उ.शि.सं. के छात्रों को शामिल करने के लिए एक साझेदारी शुरू की जा सके।

श्री एम.एच. बंथनाल, प्रबंध निदेशक, के.ए.पी.पी.ई.सी., ने कर्नाटक उ.शि.सं. के छात्रों को शामिल करने के तौर-तरीकों पर चर्चा करने के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. की कर्नाटक कोर टीम के साथ व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की। इस बैठक के बाद एक ऑनलाइन विचार नेतृत्व सत्र का आयोजन किया गया जिसमें जिला नोडल अधिकारी (जे.डी.ए., जे.डी.एच., जे.डी.एफ.) और कर्नाटक जिलों के उ.शि.सं. के प्रधानाचार्यों ने भाग लिया। श्री बंथानाल ने सभी संस्थागत प्रमुखों का स्वागत किया और बताया कि संस्थानों और छात्रों के लिए नोडल एजेंसी के दरवाजे खुले हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने में मदद करने का अवसर का लाभ उठाए। कर्नाटक में एम.जी.एन.सी.आर.ई. आर.ई.डी. टीम एक जनपद एक उत्पाद योजना का उपयोग करके ग्रामीण उद्यमिता पर जिलेवार कार्यशालाओं का आयोजन कर रही है।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. -आर.ई.डी.सी. जिला नोडल अधिकारियों से जुड़े हुए हैं जिनके माध्यम से छात्र स्थानीय व्यक्तिगत उद्यमों, किसान उत्पादक संगठनों, स्वयं सहायता समूहों और सहकारी समितियों के साथ संपर्क करेंगे और काम करेंगे।

ओ.डी.ओ.पी. कार्यशालाएं प्रगति पर हैं

"यदि आप एक मुफ्त स्तर की पेशकश कर सकते हैं जो बहुत अधिक मूल्य प्रदान करता है, तो यह स्वाभाविक रूप से आपके उत्पाद को और अधिक तेज़ी से फैलाने में मदद करेगा।" त्रिपुरा में सिपाहीजला जिले के विभिन्न उच्चतर शिक्षण संस्थानों के संकाय सदस्यों ने एक कार्यशाला में भाग लिया और सिपाहीजला में ओ.डी.ओ.पी. उत्पाद को बढ़ावा देने में ग्रामीण उद्यमों को समर्थन देने का वादा किया। सुश्री परमिता चक्रवर्ती, जिला संसाधन व्यक्ति, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय से सिपाहीजला जिला, ने प्रधान मंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम (पी.एम.एफ.एम.ई.) योजना के तहत ओ.डी.ओ.पी. दृष्टिकोण के बारे में कार्यशाला के दौरान अपनी अंतर्दृष्टि साझा की और बताया कि यह कैसे छात्रों को उद्यमी बनने में मदद करेगा।

"यह प्रत्येक नागरिक के लिए अपने "स्थानीय" उत्पादों के बारे में "मुखर" बनने और उन्हें "वैश्विक" बनाने का समय है। कर्नाटक में उडुपी जिले के विभिन्न उच्चतर शिक्षण संस्थानों के प्रतिभागियों ने अपने उत्पादों को बढ़ावा देने में ग्रामीण उद्यमों को समर्थन देने के लिए अपनी रुचि व्यक्त की। श्री सूरज शेट्टी और श्री बी. अभिषेक, उडुपी और बैंगलोर जिलों के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के जिला संसाधन व्यक्तियों ने ओ.डी.ओ.पी. दृष्टिकोण के बारे में कार्यशाला के दौरान अपनी **अंतर्दृष्टि साझा की है।**

पटना, बिहार

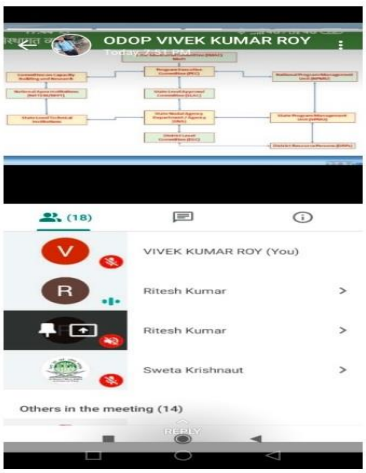

उडुपी, कर्नाटक

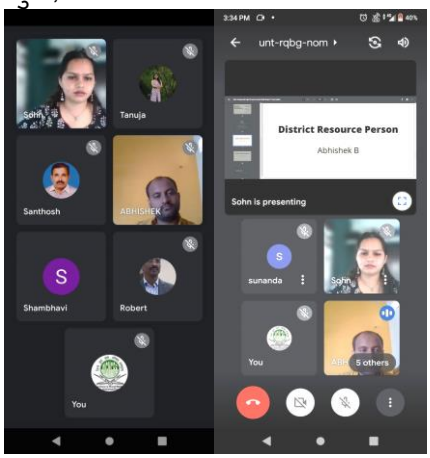

अंबाला, हरियाणा

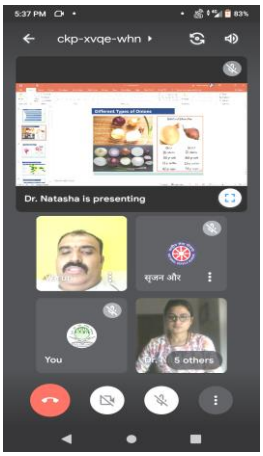

भिवानी, हरियाणा

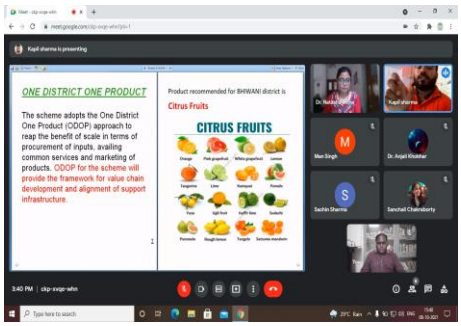

सिपाहीजला, त्रिपुरा

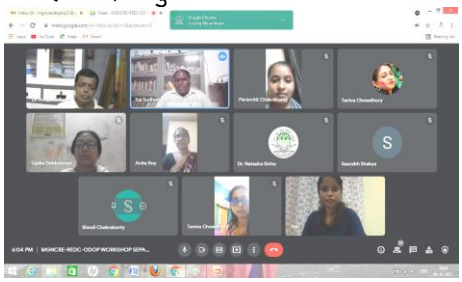

धारवाड़, कर्नाटक

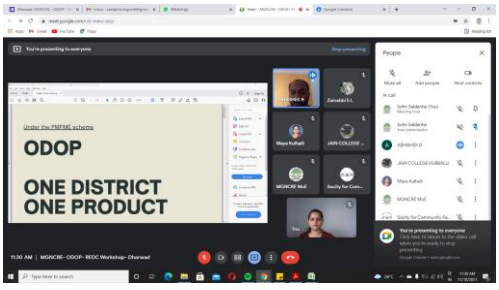

हावेरी, कर्नाटक

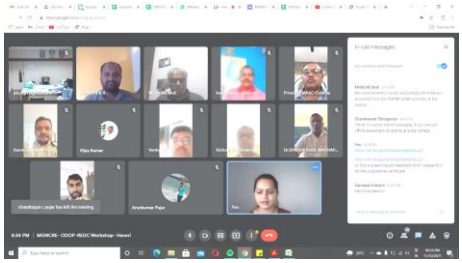

मेरठ, उत्तर प्रदेश

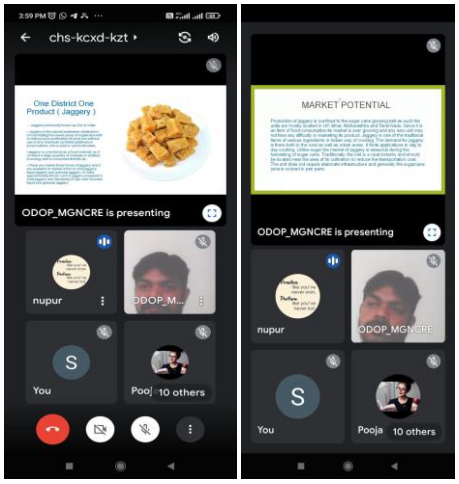

अजमेर, राजस्थान

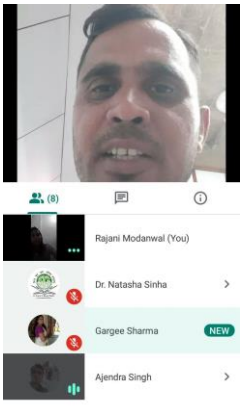

Program Agenda:

- Introduction to Rural Entrepreneurship and benefits
- MOFPI PMFME ODOP Scheme
- Collaborating with District Nodal Agency for training and skill development
- Internship through field assignments leading to Apprenticeship and Entrepreneurship
- Awards and Recognition

एम.जी.एन.सी.आर.ई. कौशल विकास एकीकरण योजनाएं

ग्रामीण युवाओं को उद्योग के लिए तैयार कर सशक्त बनाना

अप्रेंटिसशिप आधारित डिग्री प्रोग्राम पर एम.जी.एन.सी.आर.ई. के प्रस्ताव - एग्री स्टोरेज और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में बी.एम.एस. डिग्री प्रोग्राम को अधिकारियों ने हरी झंडी दे दी है। कृषि भंडारण और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन पाठ्यक्रम में यह बी.एम.एस. एक वजीफा के साथ आता है और इसे लगभग 10 संस्थानों में पेश किया जा सकता है जहां ग्रामीण प्रबंधन में एम.जी.एन.सी.आर.ई. के बी.बी.ए. की शुरुआत की गई है।

भारतीय राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एन.एस.डी.सी.) के माध्यम से कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एम.एस.डी.ई.) द्वारा स्थापित लॉजिस्टिक्स सेक्टर स्किल काउंसिल (एल.एस.सी.) ने यू.जी.सी. के दिशानिर्देशों के अनुसार सात अप्रेंटिसशिप आधारित यू.जी. डिग्री प्रोग्राम तैयार किए हैं। रसद क्षेत्र में प्रबंधन के पर्यवेक्षी स्तर पर लाभकारी रोजगार के लिए पर्याप्त कौशल और ज्ञान बनाने का उद्देश्य हैं।

एल.एस.सी. के कार्यक्रमों का मुख्य फोकस कौशल विकास है, और इसलिए उद्योग शिक्षुता के रूप में नौकरी पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अंतर्निहित है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, जुलाई 2020 में अधिसूचित अपने दिशानिर्देशों में, डिग्री कार्यक्रमों में शिक्षुता प्रशिक्षण के एकीकरण को प्रोत्साहित करता है। इस डिग्री प्रोग्राम की पाठ्यक्रम संरचना को विनिर्देशों के अनुसार विकसित किया गया है। डिग्री प्रोग्राम में चार शिक्षण सेमेस्टर और दो शिक्षुता सेमेस्टर हैं। छात्रों को शिक्षुता प्रशिक्षण के दौरान ऑन-द-जॉब प्रशिक्षण मिलेगा और सेमेस्टर V और VI के दौरान लगभग रु.9,000/- का मासिक वजीफा प्राप्त होगा। यह ग्रामीण युवाओं को उद्योग के लिए तैयार कर उन्हें सशक्त बनाना है।

एल.एस.सी. उन उच्चतर शिक्षा संस्थानों के साथ सहयोग कर रहा है जिनमें स्वीकृत प्रवेश की सीमा तक छात्रों को प्रवेश देने की क्षमता है। शिक्षुता अन्तर्निहित कार्यक्रमों का शुभारंभ विश्वविद्यालय महाविद्यालयों और/या विश्वविद्यालयों से संबद्ध स्वायत्त महाविद्यालयों में सहयोग मोड या टर्न-की मोड पर किया जा सकता है।

एल.एस.सी. से सहायता: पाठ्यचर्या विकास और निरंतर सुधार एम.ओ.ओ.सी. प्रारूप के तहत संबद्ध पाठ्यक्रमों की डिजाइनिंग और पेशकश;

शिक्षण संसाधन तैयार करना और संकाय और छात्रों के साथ साझा करना; अप्रेंटिस अधिनियम, 1961 के प्रावधानों के तहत सभी छात्रों के लिए रसद कंपनियों में शिक्षुता प्रशिक्षण (ओ.जे.टी.) सुरक्षित करना; शिक्षुता अधिनियम के अनुसार प्रत्येक छात्र के लिए शिक्षुता प्रशिक्षण अवधि के दौरान प्रति माह लगभग रु.9,000/- का मासिक वजीफा सुरक्षित करना; शिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए संसाधन व्यक्तियों को जोड़ना जिसके लिए सहयोगी संस्थान में पूर्णकालिक संकाय नहीं है; शिक्षुता के दौरान छात्रों के प्रदर्शन और सीखने का आकलन करना; डिग्री प्रोग्राम को सफलतापूर्वक पूरा करने पर छात्रों को रु.20,000 से रु.25,000 के मासिक वेतन सीमा में अंतिम प्लेसमेंट सुरक्षित करने में सक्षम बनाता है। कार्यक्रम कार्यान्वयन की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए सहयोगी संस्थान में शैक्षणिक प्रक्रिया का वार्षिक मूल्यांकन।

व्यावसायिक शिक्षा अध्यापन कार्य योजना 2021-22

व्यावसायिक गतिविधि और अनुभवात्मक शिक्षा की सराहना करना

एस.सी.ई.आर.टी. / डाइट / विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग / शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज टास्क फोर्स के लिए व्यावसायिक शिक्षा अध्यापन कार्य योजना 2021-22 पर 17 क्लस्टर कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

व्यावसायिक शिक्षा अध्यापन कार्य योजना कार्यशालाओं के उद्देश्य हैं:

व्यावसायिक शिक्षा अध्यापन (वी.ई.पी.) के तत्वज्ञान को समझना; वी.ई.पी. के तहत 6 प्रकार की गतिविधियों से परिचित हों; एक जिले एक फसल और क्राफ्ट की पहचान करें और अपने जिले की फसल और/या क्राफ्ट को आर्थिक मूल्य के साथ उत्पादक कार्य के रूप में छात्र शिक्षकों द्वारा की गई एक स्थायी व्यावसायिक गतिविधि के रूप में प्रस्तुत करने के तरीके पेश करें; चुने हुए व्यावसायिक गतिविधि में डी. एल. एड./बी. एड. और स्कूल पाठ्यक्रम को एकीकृत करने के तरीकों की पहचान करें; इस बात की सराहना करें कि व्यावसायिक गतिविधि छात्र शिक्षकों के लिए एक अनुभवात्मक शिक्षा की गतिविधि होगी; एक केस स्टडी के माध्यम से स्थानीय जरूरतों के आधार पर सामुदायिक जुड़ाव के तरीकों से परिचित हों; प्राथमिक स्तर पर अनुभवात्मक अधिगम के विभिन्न तरीकों की एक केस स्टडी के माध्यम से चर्चा करें; उन गतिविधियों की पहचान करें जिन्हें वे निर्धारण वर्ष 2021-22 में लागू करेंगे; संस्थान में वी.ई.पी. एक्शन प्लान टास्क फोर्स की आवश्यकता की सराहना करना और उसका गठन करना; व्यावसायिक शिक्षा के प्रलेखन और कार्यान्वयन के लिए टास्क फोर्स को सक्रिय करें।

"व्यावसायिक शिक्षा पर बहुत अधिक तनाव है और ठीक है, क्योंकि एन.ई.पी. 2020 का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि 2025 तक, स्कूलों और उच्चतर शिक्षा प्रणालियों में कम से कम 50% शिक्षार्थियों के पास वी.ई. और 2030 तक 100% है। भविष्य के लिए प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक, अपने शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में व्यावसायिक गतिविधियों के लिए व्यावहारिक अनुभव प्रदान करेंगे और इससे उन्हें शिक्षक बनने में मदद मिलेगी जो स्कूल पाठ्यक्रम वितरण पद्धति में अनुभवात्मक शिक्षा का उपयोग करेंगे", **श्रीमती एम. राधा रेड्डी, निदेश राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एस.सी.ई.आर.टी.),** तेलंगाना 5 अक्टूबर, 2021 को एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा आयोजित व्यावसायिक शिक्षा अध्यापन कार्य योजना 2021-22 पर ऑनलाइन राज्य स्तरीय कार्यशाला के दौरान ने कहा।

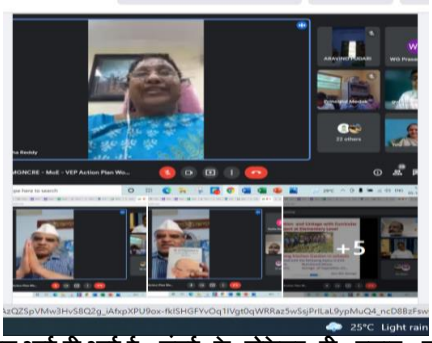

एन.आई.टी.आई.ई. मुंबई के प्रोफेसर टी. प्रसाद, जो सम्मानित अतिथि थे, ने डाइट में "सीखते समय कमाएं" गतिविधियों की व्यावहारिक युक्तियों और रणनीतियों और उन्हें स्कूल के पाठ्यक्रम के साथ एकीकृत करने के तरीके साझा किए। तेलंगाना के दस डाइट के प्रधानाचार्यों और संकाय सदस्यों ने एक जनपद एक उत्पाद प्रमुख फसल और क्राफ्ट के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा पद्धति को डी. एल. एड. पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के दिलचस्प तरीके साझा किए। कार्यशाला में तेलंगाना के एस.सी.ई.आर.टी. और डाइट के प्रधानाध्यापक और संकाय सहित लगभग 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

"छात्र द्वारा अध्ययन के दौरान आय अर्जित करने की सुविधा प्रदान की जाती है; प्रत्येक छात्र किसी न किसी उत्पादक कार्य में शामिल हो सकता है और उत्पादित वस्तुओं को बेच सकता है" कार्यशाला के प्रतिभागियों द्वारा साझा की गई प्रतिक्रिया थी। श्री ए. नरेंद्र, एस.सी.ई.आर.टी. से कार्यशाला के समन्वयक थे और उन्होंने समापन भाषण भी दिया।

"व्यावसायिक शिक्षा में मूल रूप से व्यावहारिक पाठ्यक्रम शामिल हैं, जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति कौशल और अनुभव प्राप्त करता है जो सीधे भविष्य में करियर से जुड़ा होता है। समय प्रबंधन और बैठक की समय सीमा एक व्यावसायिक पाठ्यक्रम में सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और अपने अध्ययन के दौरान छात्र आम तौर पर साक्ष्य (योजना, रिपोर्ट, चित्र, वीडियो, प्लेसमेंट) का एक पोर्टफोलियो तैयार करते हैं, जिसे छात्रों की क्षमताओं के प्रदर्शन कार्य के रूप में लिया जाता है। सिक्किम विश्वविद्यालय ने अपने छात्रों के लिए सामुदायिक जुड़ाव और अनुभवात्मक शिक्षा शुरू की है और छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा गतिविधियों के लिए एक्सपोजर मिल रहा है"

डॉ. योदिदा भूटिया, विभाग प्रमुख, शिक्षा, सिक्किम विश्वविद्यालय ने व्यावसायिक शिक्षा अध्यापन कार्य योजना 2021-22 पर ऑनलाइन क्लस्टर कार्यशाला के दौरान कहा है, जो एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा 30 अक्टूबर, 2021 को सिक्किम विश्वविद्यालय और शिक्षा के संबद्ध कॉलेजों के लिए आयोजित किया गया।

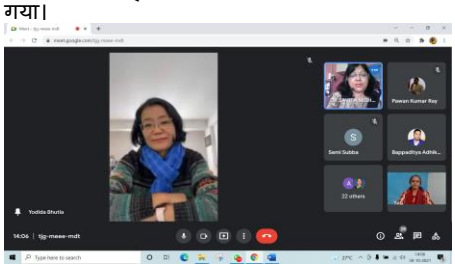

"असम डाइट अनुभवात्मक शिक्षण गतिविधियों को लागू करने का प्रयास कर रहे हैं और असम में स्कूली पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकों को भी अनुभवात्मक शिक्षा की सुविधा के लिए संशोधित किया जाएगा।" डाइट कार्बी आंगलोंग, असम की प्राचार्य, श्रीमती काकराई टेरोनपी

असम विश्वविद्यालय सिलचर में और डाइट असम कार्यशाला 22 अक्टूबर को आयोजित की गई थी, जिसमें प्रो. अजय कुमार सिंह, विभाग प्रमुख, शिक्षा मुख्य अतिथि थे और 40 प्रतिभागियों में शामिल थे, जिनमें प्राचार्य, विभाग प्रमुख, असम विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य और संबद्ध कॉलेज शामिल थे। असम के डाइट ने व्यावसायिक शिक्षा पद्धति को बी.एड. में एकीकृत करने के दिलचस्प तरीके साझा किए। और डी. एल. एड. पाठ्यक्रम एक जनपद एक उत्पाद (ओ.डी.ओ.पी.) प्रमुख फसल और क्राफ्ट जैसे अदरक, सरसों के उत्पाद, अनानास, मिर्च, आलू, केला, बांस और बेंत के माध्यम से पाठ्यचर्या।

डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय असम में कार्यशाला 24 अक्टूबर को आयोजित की गई थी जिसमें शिक्षा विभाग के प्रमुख डॉ. के.पी. गोगोई मुख्य अतिथि थे और 50 प्रतिभागी शामिल थे जिनमें प्राचार्य, विभाग प्रमुख, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य और असम के संबद्ध कॉलेजों और डाइट ने भाग लिया और कार्य योजना प्रस्तुत किया।

तेजपुर विश्वविद्यालय असम में कार्यशाला 26 अक्टूबर को आयोजित की गई थी जिसमें शिक्षा विभाग के प्रमुख प्रोफेसर नील रतन रॉय मुख्य अतिथि थे और 95 प्रतिभागी शामिल थे, जिनमें प्राचार्य, विभाग प्रमुख, तेजपुर विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य और असम के डाइट शामिल थे, उन्होंने कार्य योजना प्रस्तुत की। और व्यावसायिक शिक्षा पद्धति को बी.एड. और डी. एल. एड. पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के दिलचस्प तरीके साझा किए। असम के तीनों विश्वविद्यालयों, संबद्ध कॉलेजों और डाइट में टास्क फोर्स को गठन किया गया था।

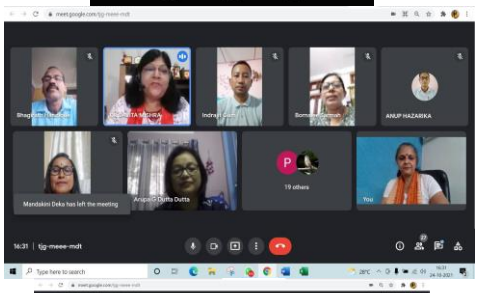

"व्यावसायिक शिक्षा हवा की तरह है, यह जीवन के लिए आवश्यक है और हमें वास्तविक जीवन के अनुभवों में छात्रों को तल्लीन करने का प्रयास करना चाहिए जो दिल और सिर को प्रभावित करने के लिए हाथ का उपयोग करते हैं।" - आंध्र प्रदेश के एस.सी.ई.आर.टी.संकाय और डाइट के लिए 19 अक्टूबर, 2021 को एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा आयोजित व्यावसायिक शिक्षा अध्यापन कार्य योजना 2021-22 पर ऑनलाइन राज्य स्तरीय कार्यशाला के दौरान **एम.जी.एन.सी.आर.ई. के अध्यक्ष डॉ. डब्ल्यू. जी. प्रसन्न कुमार** ने कहा हूँ।

डॉ. वाई. गिरिबाबू यादव, प्रोफेसर एस.सी.ई.आर.टी., आंध्र प्रदेश और कार्यक्रम के समन्वयक, ने अपनी समापन टिप्पणी में कहा, "ए.पी. डाइट अनुभवात्मक शिक्षा की गतिविधियों को लागू करने का प्रयास कर रहे हैं और ए.पी. में स्कूल पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकों को भी अनुभवात्मक सुविधा के लिए संशोधित किया जाएगा।"

13 डाइट और एस.सी.ई.आर.टी. आंध्र प्रदेश के प्रधानाचार्य और संकाय सदस्य सहित 120 प्रतिभागियों ने एक जनपद एक उत्पाद प्रमुख फसल और क्राफ्ट जैसे गन्ना, आम, केला, एक्वा, फीता, मक्का, नारियल और कॉयर उत्पाद के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा पद्धति को डी. एल. एड. पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के दिलचस्प तरीके साझा किए।

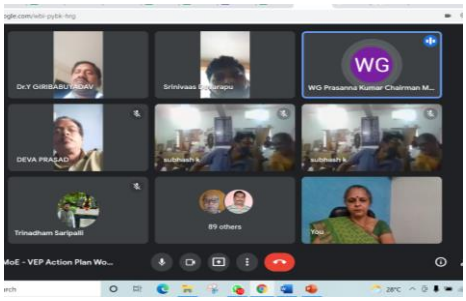

एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, शिक्षा विभाग, सी.बी.एल.यू. भिवानी, हरियाणा और एस.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में भी कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

एस.सी.ई.आर.टी. की ओर से निदेशक एस.सी.ई.आर.टी. डॉ. ऋषि गोयल, उप निदेशक डॉ. सुनील बजाज, श्रीमती सीमा वडावा, अलका रानी, श्रीमती राजेश यादव ने भाग लिया और हरियाणा के डाइट के सभी संकाय सदस्य और प्राचार्यों ने भी कार्यशाला में भाग लिया।

कुलपति प्रो. राज कुमार मित्तल, रजिस्ट्रार डॉ. जितेंद्र भारद्वाज और सी.बी.एल.यू., भिवानी के शिक्षा विभाग के सभी संकाय सदस्य, हरियाणा के संकाय सदस्य और प्राचार्य बी.एड. कॉलेज कार्यशाला में भी शामिल हुए।

एस.सी.ई.आर.टी. की ओर से **संयुक्त निदेशक डॉ. नाहर सिंह और श्रीमती नीलम यादव** ने भाग लिया और दिल्ली के सभी डाइट के संकाय सदस्य और प्राचार्य भी कार्यशाला में शामिल हुए।

कार्यशालाओं में व्यावहारिक कौशल-आधारित कदमों, सावधानियों और प्रायोगिक शिक्षण के लिए उपकरण और सामुदायिक जुड़ाव घटक के साथ कार्य शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया। एक संरचित प्रक्रिया के माध्यम से, कार्यशालाओं ने विशिष्ट परिणामों को प्राप्त करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा अध्यापन-विज्ञान की समझ को सक्षम बनाया।

"वोकेशनल हायर सेकेंडरी एजुकेशन (वी.एच.एस.ई.) को 1983 में केरल में नया रूप दिया गया था और वर्तमान में, राज्य में एन.एस.क्यू.एफ. पाठ्यक्रम के साथ 47 पुनर्गठित पाठ्यक्रमों में वी.एच.एस.ई. प्रदान करने वाले 389 स्कूल हैं। शिक्षकों को व्यावसायिक शिक्षा में प्रशिक्षित किया जाता है और पेशेवरों को शिक्षाशास्त्र में प्रशिक्षित किया जाता है। वी.एच.एस.ई. का इंडस्ट्री इंस्टीट्यूशन इंटरेक्शन सेल ओ.जे.टी. सपोर्ट में मदद करने वाली पार्टनरशिप बनाता है। सेक्टर स्किल काउंसिल हमारे बाहरी परीक्षक हैं।" **श्री के. जीवन बाबू, निदेशक, सामान्य शिक्षा, केरल** *ने 12 अक्टूबर, 2021 को एम.जी.एन.सी.आर.ई. द्वारा आयोजित व्यावसायिक शिक्षा अध्यापन कार्य योजना 2021-22 पर ऑनलाइन राज्य स्तरीय कार्यशाला के दौरान कहा।* **डॉ. जे. प्रसाद, निदेशक एस.सी.ई.आर.टी., केरल,** *अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा, "ज्ञान संचालित विकास के लिए ऐसी शिक्षा प्रणालियों की आवश्यकता है जो वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धा करने के लिए आवश्यक अत्यधिक कुशल, लचीली मानव पूंजी का विकास करें। केरल वोकेशनल हायर सेकेंडरी एजुकेशन प्रोफेशनल, वोकेशनल और वर्कप्लेस पर जोर देती है, जो सीखने के तीन प्रमुख पहलू हैं।"* **श्री अनिल कुमार, उप निदेशक (पाठ्यचर्या), वी.एच.एस.ई.,** *जो सम्मानित अतिथि थे, ने कहा कि वह डाइट छात्रों के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा अध्यापन के एकीकरण की आशा करते हैं जो छात्र शिक्षकों के लिए अनुभवात्मक शिक्षण गतिविधियों के निर्माण में सक्षम होगा। इस अवसर पर आई.आई.आई.सी. वी.एच.एस.ई. के प्रमुख डॉ. शाजी और एस.सी.ई.आर.टी. केरल के डॉ. रंजीत सुभाष ने भी बात की। अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने व्यावसायिक शिक्षा के एक सफल मॉडल को लागू करने में दूरदर्शी और रोल मॉडल होने के लिए सामान्य शिक्षा निदेशालय केरल को बधाई दी, जिसे अन्य राज्यों को अपनाना चाहिए। केरल के 13 डाइट के प्रधानाचार्यों और संकाय सदस्यों ने एक जनपद एक उत्पाद प्रमुख फसल और क्राफ्ट जैसे टैपिओका, कॉयर, अनानास, नारियल, स्क्रू पाइन फाइबर के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा पद्धति को डी. एल. एड. पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के दिलचस्प तरीके साझा किए। कार्यशाला में केरल के जी.ई.डी., वी.एच.एस.ई., एस.सी.ई.आर.टी. और डाइट के 13 प्रधानाचार्यों और 30 संकायों ने भाग लिया।*

चालू पी.एच.डी., प्रमुख और लघु अनुसंधान परियोजनाएं - नीति निर्माण के साथ-साथ कार्यान्वयन के विभिन्न आयामों में ज्ञान को बढ़ाना - राज्य और केंद्र सरकार द्वारा लागू की गई सार्वजनिक नीतियों के परिणामों पर अध्ययन के लिए प्रदान की गई 20 पी.एच.डी. रिसर्च फेलोशिप के साथ एम.जी.एन.सी.आर.ई. की अनुसंधान परियोजनाएं चल रही हैं या ग्रामीण भारत की चिंताओं को संबोधित करने वाले तत्व हैं; पाठ्यक्रम विकास पर फोकस के साथ 24 प्रमुख अनुसंधान परियोजनाएं। अध्ययन नीति निर्माण के साथ-साथ कार्यान्वयन के विभिन्न आयामों में ज्ञान को बढ़ाएगा जबकि साथ ही विशिष्ट इनपुट के साथ पाठ्यचर्या विकसित करने में सहायता करेगा; 22 लघु अनुसंधान परियोजनाएं जो नीति निर्माण के साथ-साथ कार्यान्वयन आयामों को संभालने में मदद करेंगी जिससे रचनात्मक नीति निर्माण में योगदान होगा। एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने वर्ष 2021-22 के लिए एम.जी.एन.सी.आर.ई. अनुसंधान परियोजनाओं (प्रमुख / लघु परियोजनाओं) और पी.एच.डी. फैलोशिप के लिए भारतीय सार्वजनिक नीति शोधकर्ताओं और कार्यान्वयन समीक्षा संगठनों / अनुसंधान संगठनों को बुलाया। प्रस्तावित अध्ययन बहुविषयक हो सकते हैं या सामाजिक विज्ञान विषय से संबंधित हो सकते हैं। मानदंड और प्राथमिकता वाले क्षेत्र राज्य और केंद्र सरकारों द्वारा लागू की जाने वाली सार्वजनिक नीतियां हैं जो ग्रामीण भारत की चिंताओं को संबोधित करने वाले तत्व हैं।

जिला ग्रीन चैंपियंस स्वच्छता कार्य योजना

जिला स्तरीय क्लस्टर कार्यशालाएं

"स्टेप अप! कैंपस में जल संरक्षण"।

158 उच्चतर शिक्षा संस्थानों ने जल संरक्षण गतिविधि आयोजित की है। यह गतिविधि "स्टेप अप! कैंपस में जल संरक्षण" है। 2000 से अधिक छात्रों को मात्रात्मक शर्तों में जल और संचयन आकलन में लगाया जा रहा है। 46 कॉलेजों ने स्वच्छता की चुनौतियों की पहचान की है। संस्थानों का भौतिक दौरा किया गया और वीडियो केसलेट का काम प्रगति पर है। 865 कॉलेज कैंपस सर्वे मॉनिटरिंग और ऑडिटिंग में लगे हुए हैं।

जल संरक्षण विशेषज्ञ! - जल संरक्षण के लिए अपना योगदान देने के लिए आगे आ रहे उच्चतर शिक्षा संस्थान - अपनी उपलब्धियों की रिपोर्ट करना
आई.टी.एम. विश्वविद्यालय, रायपुर
कृषि विज्ञान के पंडित दीन दयाल उपाध्याय संस्थान मॅणिपुर
डी.बी. पम्बा कॉलेज, परुमाला
शिक्षा 'ओ' अनुसन्धान भुवनेश्वर
जेआईएस स्कूल ऑफ पॉलिटेक्निक कल्याणी पश्चिम बंगाल
दशमेश गर्ल्स कॉलेज चंडीगढ़
दॅक्वेंड मिलेथ कॉलेज फॉर मेन, चेन्नई
एस.पी. कॉलेज सिरोही
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज (जे.डी.एम.सी.), दिल्ली विश्वविद्यालय
स्कूल ऑफ एलाइड हेल्थ साइंसेज सलेम टी.एन.

सरकार डिग्री कॉलेज नौशेरा जम्मू और कश्मीर
वागदेवी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग वरंगल
सेंट पीटर इंजीनियरिंग कॉलेज हैदराबाद
नादर सरस्वती कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी थेनी टी.एन.
गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज फॉर वुमन अनंतनाग, जम्मू-कश्मीर
के.जी. रेड्डी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी हैदराबाद
श्री रामचंद्र इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च चेन्नई
अय्या नादर जानकी अम्मल कॉलेज शिवकाशी
त्यागराज कॉलेज मदुरै

ग्रामीण प्रबंधन/ग्रामीण उद्यमिता

ग्रामीण उद्यमिता और स्थिरता पर संकाय विकास कार्यक्रम भारथिअर विश्वविद्यालय, कोयंबटूर के सहयोग से आयोजित किया गया था। देश भर के 57 संकाय सदस्यों ने भाग लिया।

सूक्ष्म, सामाजिक और नवोन्मेषी उद्यमों के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में विकास की व्यापक संभावनाएं हैं। उच्चतर शिक्षण संस्थानों को ग्रामीण उद्यम और ग्रामीण उद्यमिता में योगदान करने की आवश्यकता है। इसे बाजार संपर्क, ग्रामीण उद्यमिता, ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास, सूक्ष्म वित्त, आजीविका और कौशल विकास, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, कृषि के प्रबंधन और स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रबंधन के क्षेत्रों में तकनीकी सहायता के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में क्षमता निर्माण और मानव संसाधन विकास की आवश्यकता है। ग्रामीण स्वच्छता और बुनियादी ढांचे का विकास। विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और उच्चतर शिक्षा संस्थानों के संकायों और विद्वानों के लिए ग्रामीण उद्यमिता और स्थिरता पर यह संकाय विकास कार्यक्रम ग्रामीण संभावना में उद्यमिता के बारे में हालिया और आवश्यक ज्ञान पर विचारों को प्रखर करने और विकसित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। वक्ता और विशेषज्ञ अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ होते हैं जिनके पास व्यापक प्राथमिक अनुभव के साथ-साथ शिक्षाविदों में समृद्ध अनुभव होता है।

उद्देश्य: 1. ग्रामीण उद्यमिता से परिचित कराना। 2. उद्यमिता के भविष्य के रुझान को समझना। 3. ग्रामीण संदर्भ में अनुसंधान: मुद्दों और चिंताओं से परिचित होना। 4. ग्रामीण उद्यमों के लिए विपणन अभिविन्यास को समझना। 5. ग्रामीण उद्यमिता के लिए उपलब्ध वित्तीय सहायता के बारे में जानना। 6. ग्रामीण उद्यमों की विपणन स्थिरता को समझना। 7. ग्रामीण विपणक से अपेक्षाओं को समझने के लिए: मानव संसाधन परिप्रेक्ष्य।

सीखने के परिणाम: प्रतिभागी सक्षम होंगे:
1. ग्रामीण उद्यमिता, उद्यमिता के वर्तमान और भविष्य के रुझानों से परिचित हों। 2. ग्रामीण अनुसंधान के मुद्दों और सरोकारों से परिचित। 3. ग्रामीण उद्यमों के लिए विपणन अभिविन्यास से परिचित हों। 4. ग्रामीण उद्यमियों के लिए उपलब्ध वित्तीय सहायता को पहचानना। 5. ग्रामीण विपणक से अपेक्षाओं को पहचानें: मानव संसाधन परिप्रेक्ष्य।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए प्रोफेसर पी. कलिराज, कुलपति भारथिअर विश्वविद्यालय

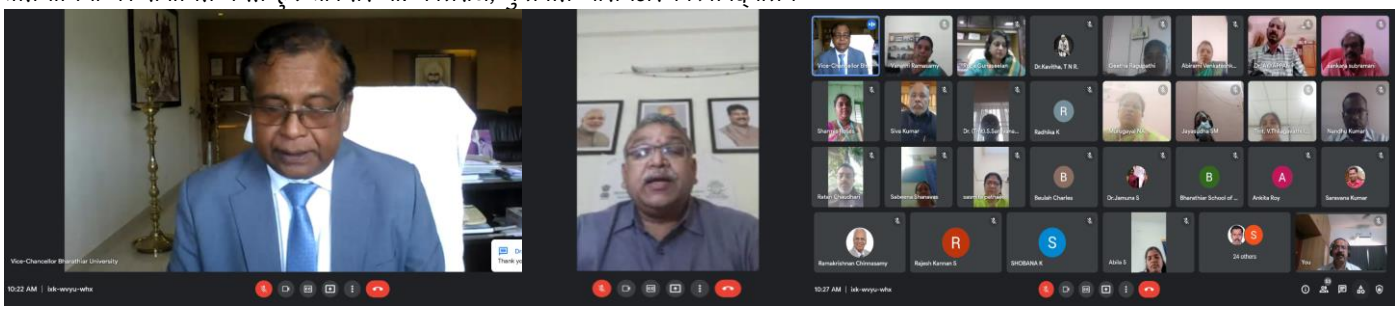

अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई. प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (ओ.डी.ओ.पी.), कृषि क्षेत्र में रसद और उद्यमिता विकास कार्यक्रम

ग्राम स्वराज श्री संगमेश्वर कला, वाणिज्य, विज्ञान, बी.सी.ए., बी.एस.डब्ल्यू और पी.जी. (एम. कॉम और एम.एस.डब्ल्यू.) कॉलेज, चडचन और रानी चन्नम्मा विश्वविद्यालय, बेलगावी के सहयोग से ग्राम स्वराज पाथवे। ***कैसे गांवों में ओ.डी.ओ.पी., लॉजिस्टिक्स और उद्यमिता को शामिल कर गांव आत्मनिर्भर बन सकते हैं।*** 5 अक्टूबर 2021 को, 26 उ.शि.सं. के संकाय सदस्यों ने ओ.डी.ओ.पी. पर अपने विचार साझा किए, बेलगावी जिले में और आसपास के जरूरतमंदों को पेशेवर मदद प्रदान की।

26 अक्टूबर 2021 को, 16 उ.शि.सं. के संकाय सदस्यों ने पेशेवर सहायता प्रदान करते हुए ओ.डी.ओ.पी. पर अपने विचार साझा किए

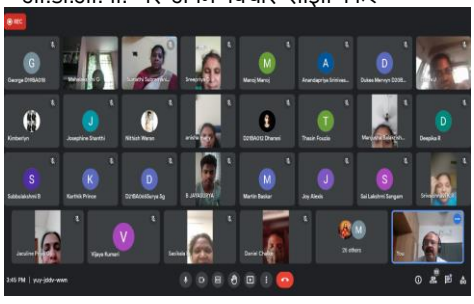

राउंड टेबल बैठक

1. मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई - ग्रामीण प्रबंधन कार्यक्रमों को शामिल करने और ओ.डी.ओ.पी. का हिस्सा बनने के लिए
2. श्री कृष्ण दास जाजू ग्रामीण सेवा महाविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र ने ओडीओपी को लागू करने के लिए अपने 120 छात्रों के साथ आसपास के गांवों के साथ काम करना शुरू कर दिया है और एक एफ.पी.सी. भी पंजीकृत किया है।
3. विवेक वर्धिनी स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, कोटि, हैदराबाद - प्रबंधन छात्रों के लिए उद्यमिता कार्यक्रम शुरू करने और कुछ कौशल विकास गतिविधियों को शुरू करने के लिए
4. चंडीगढ़ बिजनेस स्कूल ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन - अपने जिले में ओ.डी.ओ.पी. शुरू करने के लिए एक एफ.डी.पी. और क्लस्टर स्तर की बैठक आयोजित करने के लिए और उनके प्रबंधन के छात्रों के लिए कुछ पाठ्यक्रम भी शुरू करते हैं
5. कला और विज्ञान के पेट्रीशियन कॉलेज - उद्यमिता, सामाजिक उद्यमिता में अपने छात्रों के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए जुड़े हुए हैं और अपने संस्थान से ओ.डी.ओ.पी. को शामिल करने में भी मदद करते हैं।

सुविधाओं और विशेषज्ञता को साझा करके ग्रामीण प्रबंधन में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आपसी संबंधों की खोज, विस्तार और मजबूत करने के लिए 5 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए -

1. मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु
2. पेट्रीशियन कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, चेन्नई, तमिलनाडु
3. चंडीगढ़ बिजनेस स्कूल ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, ग्रेट मोहाली, पंजाब
4. विवेक वर्धिनी स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, कोटि, हैदराबाद
5. श्रीकृष्णदास जाजू ग्रामीण सेवा महाविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

आजादी का अमृत महोत्सव
डाइट में नई तालीम, व्यावसायिक शिक्षा और अनुभवात्मक शिक्षा की गतिविधियाँ

जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) के छात्र जिनके पास व्यावसायिक शिक्षा नई तालीम और अनुभवात्मक शिक्षा (वी.ई.एन.टी.ई.एल.) प्रकोष्ठ हैं, ने 15 अगस्त से 5 सितंबर तक **आज़ादी का अमृत महोत्सव** प्रतियोगिताओं में भाग लिया है।

आजादी का अमृत महोत्सव प्रतियोगिताओं के तहत **166 जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों (डाइट) से 476 विजेताओं** की घोषणा की गई, जिन्हें नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

एम.जी.एन.सी.आर.ई. ने पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.एन.सी.ई.आर.टी. भोपाल के सहयोग से भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में **आजादी का अमृत महोत्सव** प्रतियोगिताओं का आह्वान किया। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, जम्मू और कश्मीर, गुजरात, मिजोरम, दिल्ली, सिक्किम और पश्चिम बंगाल राज्यों के जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) में कुल **23,126 प्रतिभागियों** को शामिल करते हुए **428 व्यावसायिक शिक्षा और अनुभवात्मक शिक्षण कार्यशालाएँ** आयोजित की गईं। फोकस क्षेत्रों में व्यावसायिक शिक्षा, आत्मनिर्भरता (आत्मनिर्भर भारत), स्वच्छता और स्वास्थ्य और सामुदायिक जुड़ाव शामिल हैं। कार्यशालाओं में चर्चा नई तालीम और विषय पद्धति, अनुभवात्मक शिक्षा के आसपास के विषय और विभिन्न विषय पद्धतियों के लिए उपकरणों के उपयोग के आसपास रही है। कम से कम एक व्यवसाय से संबंधित **18,481 कार्य योजनाएँ** प्राप्त हुईं। **आजादी का अमृत महोत्सव** के हिस्से के रूप में बुलाए गए प्रतियोगिताओं ने पड़ोस में व्यवसाय में लगे लोगों और सम्मान के महत्व और आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

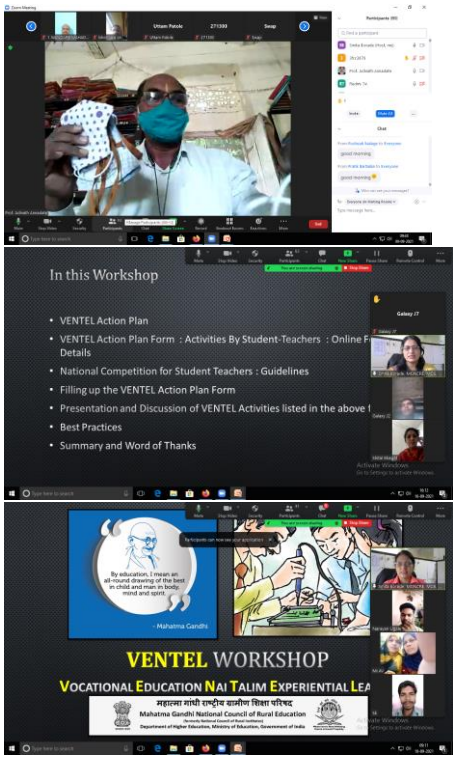

476 विजेताओं की घोषणा की गई और उन्हें सम्मानित किया गया, आंशिक सूची.....

#	डाइट/संस्थान	# विजेता
1	अगरतला त्रिपुरा	3
2	आगरा	3
3	अहमदाबाद गुजरात	3
4	अहमदनगर एम.एच.	3
5	आइजोल मिजोरम	3
6	अलीगढ़	3
7	अमरावती एम.एच.	3
8	औरंगाबाद एम.एच.	3
9	आजमघर	3
10	बागपत	3
11	बगोदर झारखंड	3
12	बंसी सिद्धार्थनगर	3
13	बाड़मेर	3
14	बस्तर छत्तीसगढ़	3
15	बस्ती	3
16	बसवा दौसा	3
17	भवन का सी.टी.ई. त्रिपुरा	3
18	भदोही	1
19	भरतपुर	3
20	भरूच	3
21	भुज	3
22	बोंगाईगांव	3
23	बुसागर झांसी	3
24	बुलंदशहर	3
25	बुलदाना	3

"मैं कॉलेज शिक्षा में क्रांति लाऊंगा और इसे राष्ट्रीय आवश्यकताओं से जोड़ूंगा। मैकेनिकल और अन्य इंजीनियरों के लिए डिग्री होगी। उन्हें उन विभिन्न उद्योगों से जोड़ा जाएगा, जिन्हें उनकी जरूरत के स्नातकों के प्रशिक्षण के लिए भुगतान करना चाहिए"
- महात्मा गांधी

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद
(पूर्व में राष्ट्रीय ग्रामीण संस्थान परिषद)
उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

5-1-174, शक्कर भवन, फतेह मैदान रोड, बशीरबाघ, हैदराबाद, तेलंगाना - 500004
दूरभाष: 040-23212120, 23422105, फैक्स: 040-23212114, ई-मेल: admin@mgncre.in , वेबसाइट: www.mgncre.org
संपादकीय टीम: डॉ. डब्ल्यू. जी. प्रसन्न कुमार, अध्यक्ष, एम.जी.एन.सी.आर.ई., डॉ.डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया .वी, संपादक
महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद (एम.जी.एन.सी.आर.ई.) की ओर से डॉ. डब्ल्यू. जी. प्रसन्न कुमार अध्यक्ष एम.जी.एन.सी.आर.ई.
द्वारा प्रकाशित और मुद्रित